CAMBRIDGE
International Education

Cambridge IGCSE™

HINDI AS A SECOND LANGUAGE **0549/02**

Paper 2 Listening **October/November 2024**

TRANSCRIPT **Approximately 45 minutes**

This document has **8** pages.

© Cambridge University Press & Assessment 2024

Cambridge Assessment International Education
Cambridge IGCSE
November 2024 Examination in Hindi as a Second Language
Paper 2 Listening Comprehension

Turn over now

[Pause 5 seconds]

MALE: **अभ्यास 1: प्रश्न 1–6**

प्रश्न 1 से 6 के लिए आप क्रमानुसार कुछ संक्षिप्त संवाद सुनेंगे। उनके आधार पर प्रत्येक प्रश्न का उत्तर नीचे दी गई रेखा पर लिखिए। आपके उत्तर जहाँ तक हो सके संक्षिप्त होने चाहिए।

आपको प्रत्येक संवाद दो बार सुनाया जाएगा।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

FEMALE: **संवाद 1**

MALE: * छात्रो, आज हम चेन्नई और मुंबई का मैच देखने जा रहे हैं जो इस साल के आइपीएल के ख़िताब की प्रबल दावेदार हैं। यह चैम्पियनशिप के निर्णायक दौर का पहला मुकाबला है इसलिए काँटे की टक्कर रहने की संभावना है। प्रायोजकों ने हमें अपने विशेष बॉक्स में बैठाने की व्यवस्था की है जहाँ से खेल देखने का अनुभव अपने-आप में अनूठा होगा। मैच के बाद एक क्विज़ में भाग लेने का मौक़ा भी मिलेगा। इसलिए खेल के उतार-चढ़ावों पर पैनी नज़र रखें। **

[Pause 10 seconds]

FEMALE: **संवाद 2**

MALE: पुरुषः * नमस्कार। क्या हुआ? कार ख़राब हो गई क्या?

महिलाः जी नहीं, कार तो ठीक है। पर टायर में हवा कम हो गई है।

पुरुषः चलिए, बदलवा देता हूँ। अतिरिक्त पहिया किधर है?

महिलाः यही तो मुश्किल है। वह तो मिस्त्री के यहाँ रह गया।

पुरुषः ठीक है। मेरे पास ज़ंज़ीर है। कार को टो कर लेते हैं।

महिलाः आपको देर तो नहीं हो जाएगी? मैं मदद बुला लेती हूँ।

पुरुषः नहीं। उसकी क्या ज़रूरत है। उसके आने तक तो आप घर भी पहुँच जाएँगी! **

[Pause 10 seconds]

FEMALE: **संवाद 3**

MALE: * ताजमहल पूरी दुनिया में प्रेम के अमर स्मारक के रूप में मशहूर है। लेकिन इसके आस-पास बसे पाँच गाँवों के लोगों के लिए यह प्रेम का दुश्मन बन गया है। जब से सर्वोच्च न्यायालय ने इसे अपनी निगरानी में लिया तब से सुरक्षा कड़ी कर दी गई है। बाहर का जो भी व्यक्ति इन गाँवों में जाता है उसे सुरक्षा पास लेना होता है। इस पाबंदी के चलते यहाँ लोगों के शादी-ब्याह में दिक्कत होने लगी है और लगभग आधे युवा कुँवारे घूम रहे हैं। **

[Pause 10 seconds]

FEMALE: **संवाद 4**

MALE: पुरुषः * स्वागत है। कहिए क्या लेना पसंद करेंगी?

महिलाः पहले तो ठंडा पानी पिला दीजिए।

पुरुषः ज़रूर! बोतल का पानी लेना चाहेंगी या नल का?

महिलाः नल का चलेगा। खाने को क्या है? आज कचौरियाँ दिखाई नहीं दे रहीं।

पुरुषः माफ़ करें, कचौरियाँ तो ख़त्म हो गईं। मटर समोसे हैं!

महिलाः गरम हों तो ला दीजिए।

पुरुषः जी! और कुछ? पानी-पूरी? कुछ मीठा?

महिलाः हाँ, बाद में ठंडी रबड़ी रसमलाई ला दीजिएगा। **

[Pause 10 seconds]

MALE: **संवाद 5**

FEMALE: * दिल्ली में रिकॉर्ड तोड़ तापमान 49 डिग्री सेल्शियस दर्ज किए जाने के बाद आँधी और हल्की बारिश के आसार हैं। राजधानी में आंशिक रूप से बादल छाए रहेंगे जिससे झुलसा देने वाली गर्मी से कुछ राहत मिलेगी। केंद्रीय दिल्ली में बूँदा-बाँदी भी हो सकती है। मौसम विभाग के अनुसार लू से तो थोड़ी राहत मिलेगी पर उमस बढ़ने से मौसम चिपचिपा बना रहेगा। मॉनसून ने केरल से अपनी यात्रा तय समय पर शुरू कर दी है। लेकिन दिल्ली तक पहुँचने में अभी देर है। **

[Pause 10 seconds]

MALE: **संवाद 6**

FEMALE: महिलाः *हैलो विपुल, उठ गए? कल के उत्सव में सबसे अच्छा क्या लगा?

पुरुषः तुम्हारा प्रस्तुतीकरण! और क्या?

महिलाः मक्खन लगाना बंद करो और सच-सच बताओ!

पुरुषः राकेश का गायन। पर तुम्हें तो वह पसंद नहीं है!

महिलाः नहीं। गला तो अच्छा है उसका, पर मैं तो शैली के सितार की प्रशंसक हूँ।

पुरुषः नहीं, दिनेश का पियानो बाज़ी मार ले गया!

महिलाः पर भई तालियाँ तो झुमरू के तबले पर सबसे ज़्यादा बजीं।

पुरुषः रिज़्वी सर ने कितनी प्रतिभाएँ तैयार की हैं न! **

[Pause 10 seconds]

FEMALE: **यह अभ्यास 1 का अंतिम संवाद था। थोड़ी देर में आप अभ्यास 2 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 2 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।**

[Pause 30 seconds]

MALE: **अभ्यास 2: प्रश्न 7**

FEMALE: **ईरान के दर्शनीय द्वीप होर्मुज़ के आकर्षणों का परिचय कराने वाली इस वार्ता को ध्यान से सुनिए और नीचे छोड़े गए खाली स्थानों (a–h) को भरिए।**

यह वार्ता आपको दो बार सुनाई जाएगी।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

MALE: *ईरानी समुद्र तट से आठ किलोमीटर दूर होर्मुज़ नाम का एक द्वीप है जो फ़ारस की खाड़ी के नीले पानी के बीच आसमान से टपके आँसू जैसा दिखता है। यह करोड़ों साल पुराने ज्वालामुखियों के लावे से बना है जो लोहे समेत विभिन्न खनिजों से भरपूर है। इन चट्टानों पर नमक की मोटी परतें चढ़ी हैं जो फ़ारस की खाड़ी के छिछले समुद्र से बनी थीं। भूगर्भ वैज्ञानिकों का मानना है कि ये परतें लावे से बनी चट्टानों के नीचे दब गई थीं। लेकिन नमक चट्टानों से हल्का होता है। इसलिए उनमें दबा हुआ नमक वक़्त के साथ चट्टानों की दरारों से बाहर निकलता रहा और उनके ऊपर नमक के टीलों के रूप में जम गया।

लोहे, नमक और दूसरे अनेक खनिजों के मिश्रण के कारण होर्मुज़ द्वीप के पहाड़ लाल, पीले और नारंगी रंगों में नहाए दिखाई देते हैं। इनसे सुनहरी धाराएँ निकलती हैं जो लाल समुद्रतट से होती हुई नीले सागर में जा समाती हैं। रंगों की इस अनोखी छटा के कारण ही इसे इंद्रधनुषी द्वीप कहा जाता है। लोग कहते हैं कि ये दुनिया के अकेले ऐसे पहाड़ हैं जिन्हें खाया जा सकता है। इनकी सुर्ख़ मिट्टी को गेलिक कहते हैं जो हेमेटाइट की वजह से लाल दिखती है। यह खनिज उद्योगों के साथ-साथ स्थानीय व्यंजनों में मसाले के रूप में भी काम आती है। इसकी चटनी बना कर तोमशी नाम की स्थानीय डबल रोटी पर इसका लेप चढ़ाया जाता है। इस मिट्टी का प्रयोग कलाकार चित्र बनाने में और रंगरेज़ कपड़े रंगने में करते हैं।

द्वीप के पश्चिम में एक और नमक का पहाड़ है जिसे नमक देवी कहा जाता है। एक किलोमीटर में फैले इस पहाड़ की गुफाएँ नमक के चमचमाते क्रिस्टलों से भरी हुई हैं, जो संगमरमर के खंभों

© Cambridge University Press & Assessment 2024

जैसे लगते हैं। यहाँ के निवासियों का विश्वास है कि इस नमक में नकारात्मक विचारों का अंत कर देने की शक्ति है। इसलिए सैलानियों से कहा जाता है कि वे जूते उतार कर नमक पर चलें। द्वीप के दक्षिण पश्चिमी भाग में मिट्टी बहुरंगी होने लगती है और पहाड़ लाल, पीले और नीले रंग के नज़र आते हैं। पास में एक मूर्तियों की घाटी भी है जहाँ हवाओं ने पत्थरों को तराश कर तरह-तरह के कलात्मक आकारों में बदल दिया है। **

[Pause 30 seconds]

FEMALE: अभ्यास 2 की यह वार्ता अब आप फिर से सुनेंगे।

[Pause 3 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 30 seconds]

MALE: अभ्यास 2 अब समाप्त हुआ। थोड़ी देर में आप अभ्यास 3 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 3 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।

[Pause 30 seconds]

FEMALE: अभ्यास 3: प्रश्न 8–15

MALE: पोषण और आहार विशेषज्ञ डॉ निदा अंसारी के साथ पत्रकार नील कोठारी की बातचीत को ध्यान से सुनिए और नीचे दिए गए प्रत्येक कथन में रेखांकित की गई ग़लती को सही शब्दों या वाक्यांश का प्रयोग करते हुए ठीक कीजिए।

यह बातचीत आपको दो बार सुनाई जाएगी।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

MALE: नीलः * डॉ निदा अंसारी, जीवन और स्वास्थ्य में आपका स्वागत है।

निदाः धन्यवाद, नील जी।

नीलः निदा जी, आपने अपने एक लेख में लिखा कि उपवास रखना सेहत के लिए उतना ही ज़रूरी है जितना संतुलित आहार। इसलिए दुनिया के हर समाज में उपवास की परंपरा देखी जा सकती है। ज़रा समझाइए कि वैज्ञानिक दृष्टि से उपवास के क्या लाभ हैं?

निदाः ताज़ा शोधकार्यों से पता चला है कि उपवास रखने से पाचन तंत्र सक्रिय हो जाता है। कोशिकाएँ अपने भीतर जमा हुए कचरे को दोबारा इस्तेमाल करना और अपनी मरम्मत करना शुरू कर देती हैं जिससे सफ़ाई हो जाती है। इसे स्वपाचन की प्रक्रिया कहा जाता है। इससे कैंसर की संभावना कम हो जाती है। शरीर में इंसुलिन का स्तर नियंत्रण में रहता है जिससे मधुमेह नहीं होता और बुढ़ापे की रफ़्तार धीमी पड़ जाती है।

नीलः ये तो कमाल के फ़ायदे हैं निदा जी। फिर इनकी इतनी चर्चा क्यों नहीं होती?

निदाः इसके कई कारण हैं। एक तो उपवास को धार्मिक विश्वासों से जोड़कर देखा जाता है। दूसरे उपवास को एक तरह की तपस्या समझा जाता है। उपवास के स्वरूप को लेकर भी भ्रांतियाँ हैं।

नीलः वाकई? तो उपवास की वैज्ञानिक परिभाषा क्या है?

निदाः उपवास का वैज्ञानिक उद्देश्य पाचनतंत्र को छुट्टी देना है। वह तभी हो सकता है जब आप एक नियत समय तक पानी के सिवा कुछ न लें। उपवास दो तरह के हैं। छोटी अवधि का

उपवास, जो कुछ घंटों का होता है। लंबी अवधि का उपवास, जो एक से कई दिनों का हो सकता है। दिन के भोजनों के बीच रखे जाने वाले निराहार को दैनिक उपवास या 8–16 का उपवास भी कहते हैं। इसमें सुविधानुसार खाने-पीने के लिए दिन के कोई 8 घंटे तय कर लिए जाते हैं जिन के दौरान लोग भोजन और नाश्ता-पानी लेते हैं। बचे 16 घंटों में ऐसे खान-पान से बचा जाता है जिससे ऊर्जा मिलती हो। ताकि पाचन तंत्र अपना काम कर सके।

नीलः लेकिन पाचनतंत्र तो उनका भी काम करता है जो हर वक़्त खाते-पीते रहते हैं। यह 16 घंटे छोड़ने का क्या आधार है?

निदाः हमारे पाचन तंत्र में स्वपाचन की प्रक्रिया शुरू होने में कम से कम 16 घंटे लगते हैं। क्योंकि इतनी देर तक ऊर्जा न मिलने के बाद ही शरीर बची-कुची और बेकार पड़ी ऊर्जा का प्रयोग करना और साफ़-सफ़ाई करना शुरू करता है।

नीलः जो लोग दैनिक उपवास न रख सकें या न रखना चाहें वे क्या करें?

निदाः वे सप्ताह में या महीने में एक दिन से लेकर तीन दिन तक का उपवास रख सकते हैं। दो से तीन दिनों के उपवास से स्वपाचन के अधिकतम लाभ मिलते हैं। लेकिन एक दिन का उपवास भी काफ़ी लाभदायक माना जाता है। और हाँ, उपवास का अर्थ यह नहीं है कि आप फल-सब्ज़ियों और दूध का सेवन करने लगें। उपवास में पानी के सिवा कोई ऐसा भोजन या पेय नहीं लेना चाहिए जिससे ऊर्जा मिलती हो।

नीलः निदा जी, पूरी जानकारी के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

निदाः आपका भी धन्यवाद। **

[Pause 30 seconds]

FEMALE: अभ्यास 3 की यह बातचीत अब आप फिर से सुनेंगे।

[Pause 3 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 30 seconds]

MALE: अभ्यास 3 अब समाप्त हुआ। थोड़ी देर में आप अभ्यास 4 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 4 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।

[Pause 30 seconds]

FEMALE: अभ्यास 4: प्रश्न 16–23

MALE: भारत के पुस्तक व्यवसाय पर दो प्रकाशकों की बातचीत को ध्यान से सुनिए और निम्नलिखित वाक्यों को पूरा करने के लिए A, B अथवा C में से किसी एक विकल्प को सही [✓] का निशान लगा कर चुनिए।

यह बातचीत आपको दो बार सुनाई जाएगी।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

FEMALE: * भारत का बाज़ार बड़ा हो रहा है। आर्थिक दशा सुधर रही है। ख़रीद क्षमता बढ़ रही है। समाज शिक्षा के प्रति गंभीर हो रहा है। इस विकसित होते समाज पर आधुनिकता और उच्च तकनीक का गहरा असर है। बेहतर जीवन की चाह ने हमारे जीवन के मौलिक सौंदर्य को भी प्रभावित किया है। सूचनाएँ और संचार बदलते हुए विश्व के सर्वाधिक शक्तिशाली अस्त्र-शस्त्र बनते जा रहे हैं। पिछले दो दशक में सूचना तंत्र अत्यधिक सशक्त हुआ है। उसमें क्रांतिकारी परिवर्तन आए हैं। लेकिन पुस्तक का महत्त्व और रोमांच इस विस्तार के बावजूद यथावत है।

MALE: यूरोप और अमरीका के बाद अब अथाह संपत्ति वाले अरब देश भी ख़ुद को पठनशील समाज बनाने में लग गए हैं। आबूधाबी और शारजाह के पुस्तक मेले दुनिया में मशहूर हो रहे हैं। शारजाह की सरकार लेखकों, अनुवादकों और बच्चों की पुस्तकों के चित्रकारों को दुनिया का सबसे बड़ी धनराशि वाला पुरस्कार दे रही है। वहाँ के पुस्तक मेलों में भले कुछ जगह मल्टीमीडिया या ई-पुस्तकों के पंडाल भी दिखें, पर दबदबा अब भी मुद्रित पुस्तकों का ही होता है।

FEMALE: बीते पच्चीस सालों से, जब से सूचना प्रौद्योगिकी का प्रादुर्भाव हुआ है, प्रकाशन की दुनिया एक ही भय में जीती रही है कि कहीं कंप्यूटर, टीवी, और टेबलेट की दुनिया छापे के काले अक्षरों को अपनी बहुरंगी चकाचौंध से निगल न ले। पर जैसे-जैसे चिंताएँ बढ़ीं, पुस्तकों का बाज़ार भी बढ़ता गया है। उसे शायद बढ़ना ही था। क्योंकि साक्षरता दर बढ़ रही है, ज्ञान पर आधारित जीविकोपार्जन करने वालों की संख्या बढ़ रही है। जो प्रकाशक बदलते समय में पाठक की बदलती रुचि को भाँप गया, वह तो चला। बाकी पाठकों की घटती संख्या का विलाप करते रहे।

MALE: अंग्रेज़ी पुस्तकों के प्रकाशन में अमरीका और ब्रिटेन के बाद भारत का तीसरा स्थान है। भारत दुनिया के सबसे विशाल पुस्तक बाज़ारों में से एक है और इसी कारण हाल के वर्षों में विश्व के कई बड़े प्रकाशकों ने भारत की ओर रुख़ किया है। भारत में महँगाई, रुपए के अवमूल्यन और चुनौती भरी सांस्कृतिक, सामाजिक, और बौद्धिक परिस्थितियों के बावजूद पुस्तक प्रकाशन एक क्रांतिकारी दौर से गुज़र रहा है। छपाई की गुणवत्ता में परिवर्तन के साथ-साथ विषयों की विविधता यहाँ की विशेषता है।

FEMALE: भारत विश्व का शायद एकमात्र ऐसा देश है, जहाँ सैंतीस से अधिक भाषाओं में पुस्तकें प्रकाशित की जाती हैं। सन 2009 में नेशनल बुक ट्रस्ट ने पठनीयता को लेकर युवाओं का एक सर्वेक्षण किया था। उस समय देश की युवा आबादी 46 करोड़ थी। पता चला कि महज़ 7.5 प्रतिशत युवा अपने खाली समय में पुस्तकें पढ़ने का शौक़ रखते हैं, बाकी इलैक्ट्रॉनिक माध्यमों से जानकारी हासिल करते हैं। हाँ, अख़बार पढ़ना पसंद करने वाले युवा ज़रूर 14.8 प्रतिशत थे। क्योंकि अख़बार जितने सस्ते और सुलभ हैं, पुस्तकें उतनी ही क़ीमती और दुर्लभ हैं।

MALE: भारत में अंग्रेज़ी और हिंदी जैसी बड़ी भाषाओं के अलावा ज़्यादातर प्रकाशन क्षेत्रीय और आंचलिक भाषाओं में होता है जो बड़ी हद तक असंगठित है। छोटे गाँवों-कस्बों में उत्साही लेखक अपने ख़र्च पर अपनी किताबें प्रकाशित कराते हैं। परिणाम स्वरूप न ये कहीं दर्ज़ होती हैं न ही चर्चित। भारत में पुस्तक वितरण भी एक बेहद कठिन कार्य है। पुस्तकों के वितरण में इंटरनेट ने यह सहयोग किया है कि उनकी जानकारी अब देश-दुनिया तक पहुँचने लगी है। कई ऑनलाइन स्टोर, यहाँ तक कि पुस्तक मेले भी लगने लगे हैं, जहाँ पुस्तकें बिक रही हैं। ज़रूरत इस बात की है कि लेखक और प्रकाशक व्यक्तिगत बिक्री के लिए संचार के नए माध्यमों का इस्तेमाल करें।

FEMALE यह भी ज़रूरी है कि लेखक अपने पाठकों की रुचि के परिष्कार के लिए उन तक जाएँ। नए पाठक तैयार करें। आज बिडंबना यह है कि मज़दूर या किसान जानता ही नहीं कि कोई लेखक उसके हालात पर कागज़ काले कर रहा है। लेखक भी यह माने बैठा है कि किताबें मेहनतकश की ख़ुराक में शामिल नहीं हैं। इसलिए वह अपना पाठक पढ़े-लिखे लोगों या सरकारी सप्लाई में ही तलाशता है। राजधानियों तक में पुस्तकें सहजता से उपलब्ध नहीं हैं। गली-मुहल्लों में जो दुकानें हैं, वे पाठ्य पुस्तकें बेच कर ही इतना कमा लेती हैं कि बाक़ी पुस्तकों के बारे में सोच ही नहीं पातीं। **

[Pause 30 seconds]

MALE: **अभ्यास 4 की इस बातचीत को अब आप फिर से सुनेंगे।**

[Pause 3 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 1 minute]

FEMALE: **अभ्यास 4 और यह परीक्षा समाप्त हुई।**
This is the end of the examination.

Permission to reproduce items where third-party owned material protected by copyright is included has been sought and cleared where possible. Every reasonable effort has been made by the publisher (Cambridge University Press & Assessment) to trace copyright holders, but if any items requiring clearance have unwittingly been included, the publisher will be pleased to make amends at the earliest possible opportunity.

To avoid the issue of disclosure of answer-related information to candidates, all copyright acknowledgements are reproduced online in the Cambridge International Education Copyright Acknowledgements Booklet. This is produced for each series of examinations and is freely available to download at www.cambridgeinternational.org after the live examination series.

Cambridge International Education is the name of our awarding body and a part of Cambridge University Press & Assessment, which is a department of the University of Cambridge.

© Cambridge University Press & Assessment 2024